Dictation 13.

Reminiscences of Benaras.

कोई दस-पंद्रह साल पहले मेरी दादी बनारस में रहती थीं। बचपन में हम हर साल गरमी की छुट्टियों में उधर जाते थे। सारा दिन कहीं न कहीं खेलते, और शाम को नदी किनारे सैर पर जाते। कभी-कभी नाव पर जाते थे। नाव से तो काशी शहर स्वर्ग की तरह दिखता था। और वहाँ का खाना तो – अरे वाह! बच्चों को और क्या चाहिए? बाज़ार में बहुत-से लोग घूमते थे। कुछ कुछ खरीदते, इधर कुछ खाते, उधर किसी से गपशप करते। उन्हें न सिनेमा चाहिए था, न टी.वी.। एक बूढ़ा मिठाईवाला मुझको मिठाई देता, पर पैसे नहीं लेता। मुझे कहता – बेटी, पानी के ज़्यादा नज़दीक मत जाना। चलो, अब घर जाओ। फिर अपनी लड़की से कहता – बच्ची पड़ोस में ही रहती है। इसे घर छोड़ दे।

***

Some ten or twenty years ago, my grandmother used to live in Benaras. In my childhood, we went there every year during summer vacations. We would play somewhere or other all day, and go for walk[s] on the river-bank. Sometimes we went on a boat. From the boat, the city of Kashi looked like paradise. And the food of Benaras ('there') – oh wonderful! What more do children want? Many people roamed the bazaar[s]. They would buy this and that, eat something here, chat with someone there. They needed neither movies nor T.V. An old sweet-seller would give me sweets, but not take money [for them]. He would say: child, don't go too close to the water. Come, go home now. Then he would say to his daughter ('girl'): the child lives in the neighborhood. Drop her home.